"काव्य रीति"

'रीति' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है 'मार्ग'। शब्दकोश में रीति के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे – शैली, पंथ, वीथि, प्रणाली, पद्धति आदि। साहित्य में 'रीति' शब्द का अभिप्राय कवि अथवा लेखक की विशिष्ट शैली से लिया जाता है। संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य की आत्मा पर विचार करते समय आचार्य वामन ने रीति सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। आचार्य वामन ने रीति की परिभाषा देते हुए कहा – "विशिष्ट पद रचना रीतिः।" अर्थात् विशेष प्रकार प्रकार की पद रचना को रीति कहते हैं। पुनः विशिष्ट का अर्थ स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं – "विशेषो गुणात्मा" अर्थात् विशिष्ट का आशय है गुणों से युक्त होना। गुण की परिभाषा देते हुए वे फिर कहते हैं कि – "गुण शब्द और अर्थ के शोभाकारक धर्म हैं।"

उक्त सभी बातों का समावेश करते हुए रीति की परिभाषा निम्न शब्दों में दी जा सकती है – "शब्द और अर्थगत चमत्कार से युक्त विशेष पद रचना को रीति कहते हैं।"

रीति सम्प्रदाय को गुण सम्प्रदाय भी कहा जाता है। आचार्य वामन ने गुणों को दो वर्गों में बाँटा है – (i) शब्द गुण – जिनकी संख्या दस होती है (ii) अर्थ गुण – जिनकी संख्या दस होती है।

अर्थ गुणों को शब्द गुणों से श्रेष्ठ माना गया है तथा इनके अन्तर्गत रस, अलंकार आदि सभी काव्य तत्व समाविष्ट हो जाते हैं। आचार्य वामन के अनुसार रीति के तीन भेद हैं –

(1.) वैदर्भी रीति, (2.) गौड़ी रीति तथा (3.) पांचाली रीति। आचार्य वामन के अनुसार वैदर्भी रीति में सभी गुण विद्यमान होते हैं। अतः वह सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, जबकि गौड़ी रीति में ओज और कान्ति नामक गुणों का समावेश होता है। पांचाली रीति में माधुर्य और सौकुमार्य इन दो गुणों का समावेश होता है।

आचार्य आनन्दवर्धन ने रीति को संघटना नाम दिया है। संघटना का अर्थ उन्होंने सम्यक् घटना किया है। वे संघटना को सम्पूर्ण सौन्दर्य का साधन मानते हैं। आचार्य वामन की रीति अपने भाव में एक स्वतंत्र अवधारणा है, जबकि आचार्य आनन्दवर्धन की संघटना रस पर आश्रित है। राजशेखर ने वचन विन्यास के क्रम को रीति कहा है। यहाँ 'वचन' का आशय शब्द अथवा पद से है तथा 'विन्यास क्रम' का अर्थ 'रचना' से है। आचार्य कुन्तक ने 'रीति' के लिए 'मार्ग' शब्द का प्रयोग किया है और इसके तीन भेद बतलाए हैं — (i) सुकुमार मार्ग, (ii) विचित्र मार्ग तथा (iii) मध्यम मार्ग। उन्होंने रीति विवेचन में कवि स्वभाव को प्रधानता दी। उनके अनुसार सुकुमार मार्ग में भाव एवं रस का नैसर्गिक सम्बन्ध बना रहता है, जबकि विचित्र मार्ग में भावपक्ष की अपेक्षा कलापक्ष की अधिक महत्ता रहती है।

आचार्य मम्मट ने रीति को 'वृत्ति' कहा है तथा तीन प्रकार के वृत्तियों का उल्लेख किया है — (i) उपनागरिका वृत्ति, (ii) परुषा वृत्ति और

(iii) कोमला वृत्ति । आचार्य मम्मट के अनुसार, "वृत्ति नियत वर्ण व्यापार को कहा जाता है।"

'अग्निपुराणकार' ने चार प्रकार की रीतियाँ मानी हैं — (i) वैदर्भी, (ii) गौड़ी, (iii) पांचाली तथा (iv) लाटी । उन्होंने काव्य में गुणों को अलंकारों से अधिक महत्व दिया है । आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार गुणों से काव्य का उत्कर्ष होता है, जबकि दोषों से से शब्दार्थ का अपकर्ष होता है।

(1) वैदर्भी रीति —

वैदर्भी रीति का मूल आधार माधुर्य गुण होता है। इसके साथ इसमें सुकुमार वर्ण योजना रहती है। ट, ठ, ड, ढ वर्णों का प्रयोग इसमें नहीं होता है । यह रीति श्रृंगार, करुण आदि कोमल रसों के लिए उपयुक्त मानी गई है । इसमें शब्द योजना समास रहित होती है, जैसे— "कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि ।
कहत लखन सन राम हृदय गुनि ।।" — तुलसी

2. गौड़ी रीति —

गौड़ी रीति ओज एवं कान्ति गुणों से सम्पन्न होती है तथा इसमें माधुर्य गुण का पूर्ण अभाव होता है। यह रीति रौद्र, भयानक रसों की अभिव्यक्ति के लिए उत्तम है। इसमें भाषा सामासिक होती है, कठोर वर्णों की योजना की जाती है, जैसे —

"राक्षस विरुद्ध प्रत्यूह क्रुद्ध कपि विषम हूह ।
विच्छुरित वह्नि राजीवनयन हत लक्ष्य बाण ।।"
— राम की शक्तिपूजा (निराला)

3. पांचाली रीति —

इस रीति में माधुर्य एवं सौकुमार्य गुणों का विधान रहता है। इसमें छोटे समासों वाली भाषा रहती है। यह मध्यम स्तर की रीति मानी गई है, जैसे —

"विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी स्नेह स्वप्न मग्न
अमल कोमल तनुजी जुही की कली।"
— जुही की कली (निराला)